आत्मअभिमानी होकर बैठे हो। बच्चे यह तो समझ ते है कि हम ब्राहमणों को ही ज्ञान मिलता है। हमको भगवान
पढाते है। भगवानके नाम का भी पता है। शिव भगवान पढाते है। भगवान परमधाम शान्तिः धाम मे र
है। हम आत्मायें भी शान्तिः धाम की ही रहने वाली है। बाप द्वारा तुमको पता पडा है कि यह अन्तिम
जन्म है। बहुत जन्मो के अन्त की भी अन्त है। हमने 84 जन्म पूरे किये है। अब बाबा टीचर बन कर पढा
रहे है। उस पढाई मे तो वर्ष भी कितने ही लगते है और टीचर भी बदलते जाते है। तुम ब्राहमण बच्चे
जानते हो कि यह पढाई बाप कल्प मे एक ही बार पढाते है। इमतिहान एक ही है मनुष्य से देवता बनने
लिये। ऐम आब्जेक्ट का पता है। ऊंच पढाई है। उस पढाई से तो एक जन्म की आमदनी होती है।
यह तो बहुत ऊंच है। विश्व का मालिक बनना है। जबकि पूरा निश्चय है कि भगवान पढाते है। तो
उनके ही पास जावेंगे। उनके ही डायरैक्ट जाकर वर्शान्स सुनेंगे। कितनी ऊंची पढाई है! जितनी ऊंच
पढाई है उतना तो अच्छी रीती पढो। यहां पढाईपर खर्चा तो है नही। तो सस्ती पढाई लगती है।
पैसे कुछ भी नही है। इसलिये ही सस्ती पढाई समझ कर अच्छी रीती पढते नही है। भगवान के बच्चे
भी मददगार है। बहुतों को तो बच्चे भी पढाते रहते है। बहुत पढने ~~समझ~~=समझने लिये आते है। फिर उनसे
कुछ निकलते है। ऐसे क्यों होता है? जब बाप पढाते है तो एकदम पढाई ही मे लग क्यों नही जाते है?
बाप कहते है कि बच्चो बाप को याद करो। 84 का चक्र पूरा हुआ है अब नगें ही घर जाना है। बाबा
तो बहुत समझाते है कि चलते फिरते घूमते खाते हुये याद ही मे रहो। तो कोई भी वहां से पास करेंगे
तो उन तक भी प्रभाव आवेगा। योग मे बच्चे रहते है तो पूरा तीर भी नही लगता है। फिर बाबा
प्रवेश कर दृष्टी दे देते है। अच्छी-2 पुआईन्टस भी सुना लेते है। ब्राहमणी भी समझती है कि बाबा ने ही आकर
समझाया है। यह भी ड्रामा मे ही पार्ट है। तुम बच्चे भी सर्विस ~~बहुसे~~=~~बहुत~~= करने लिये ड्रामा के वश
हो। जो सर्विस नही करते है तो कहेंगे कि धारणा भी पूरी नही करते है। इसलिये है सर्विस नही कर
सकते। यह भी ड्रामा अनुसार ही अभी चल रहा है। ड्रामा की पटी पर रहने पर ही साक्षी होकर
रह सकेंगे। अभी तो ज्ञान भी बुधी मे है। मनुष्य तो सभी अज्ञान अंधेरे मे सोये हुये है। बाप समझाते है
कि पढ़ती भी आत्मा ही है! परन्तु देहअभिमान होने कारण अपने को शरीर समझती रहती है! मै आत्मा
हूं यह भी ज्ञान नही है। इसको ही कहा जाता है देहअभिमान। अब तो बच्चो को आत्मअभिमानी बनना
है। यह मेहनत नही कर पाते है तो ~~फे~~= फेलहो जाते है। याद मे हि माया चमाट मारती है। विकर्म
कर लेते है। बाप खबर याद दिलाते है और समझाते है कि अब समय वेस्टनही करो। तुम बहुत समय से
मौत-2 करते रहते हो तो मनुष्य समझते है कि यह तो सिर्फ कहते ही रहते है। होता तो कुछ भी नही
है। आखरीन एक दिन तो मौत जरूर ~~आ~~ आ ही जावेगा। फिर तो अपना बचाव भी नही कर सकेंगे। पुराना
शरीर तो छोडना ही है। तुमको तो बहुत पुरुषार्थ करना है। ~~तुमको~~=~~बहुत~~ बाप बैठ समझाते है कि कैसे योग
की यात्रा पर रहना है। कैसे विश्व पर विजय पा सकते हो। वो है पुण्यात्माओं की दुनियां। यह है
पापात्माओं की दुनियां। अपने को पतित समझ कर ही तो बुलाते है ना। तो बाप को कल्प-2 आना
पड़ता है। यही अन्तिम लडाई है। इसके बाद कोई लड़ाई नही लगती है। वो है ईश्वरीय राज्य। यह है
आसुरी राज्य। अब ईश्वरीय राजधानी स्थापन हो रही है। तुम जानते हो कि बादशाही कैसे ट्रन्सफर होती है।
तुम जानते हो कि मै संगम पर आकर सबका भला करता हूं। यह भी नथिंग न्यूं। कल्प पहले भी ऐसा ही
हुआ था। अब तुम जानते हो कि आसमान से आकर हम धरती पर पडे है। अब बाप फिर विश्व का
मालिक बनाते है। पहले-2 स्वर्ग नई दुनियां मे तुम्हि थे। तुम्हारे धर्म मे सुख बहुत है। बाप ने भी कहा
है कि यह धर्म बहुत सुखो का देने वाला है। अब सूर्यवंशी बनने लिये पुरुषार्थ करो। ब्राहमण, सूर्यवंशी चन्द्र
वंशी तीनो धर्मों का शास्त्र एक ही है। तीनो धर्मों की अभी ही स्थापना बाप कर रहे है। गुड नाईट